ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. No.- 158-164
ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- IV, Issues-26, YEAR- Oct.-Dec.-2022

महिला डेयरी विकास परियोजना अल्मोड़ा की दुग्ध समिति से जुड़ी महिलाओं की स्वास्थ्य व धार्मिक प्रस्थिति

डॉ0 हेमा जोशी
असिस्टेंट प्रोफेसर– समाज कार्य विभाग, उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी (उत्तराखण्ड) भारत

Received-09.11.2022, Revised-15.11.2022, Accepted-20.11.2022 E-mail: lekhanisuman25@gmail.com

सारांशः ***विश्व स्वास्थ्य संगठन यूनिसेफ व राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण के आकड़ों तथा गैर सरकारी संगठनों की रिपोर्ट के निष्कर्षों के अनुसार, हमारे यहाँ ग्रामीण महिलाओं का स्वास्थ्य देश के आम नागरिकों की तुलना में कहीं अधिक निम्न स्तरीय है। भारत में ग्रामीण महिलाएँ लिंगभेद का शिकार होने के कारण बचपन में ही कुपोषण ग्रस्त हो जाती हैं। इसके इतर पुरूषों की तुलना मे वह दोगुना कार्यबोझ से दबी होती है, जो उनकी स्वास्थ्य स्थिति को और अधिक बदतर बनाता है।***

कुंजीभूत शब्द– लिंग भेद, कुपोषण, कार्यबोझ, समान अधिकार, घर परिवार, समान अधिकार, स्वास्थ्य मानव विकास।

साहित्य पुनरावलोकन– "भारत जैसी घनी आबादी वाले देश में एक प्रभावी सार्वजनिक स्वास्थ्य नेटवर्क के अभाव के परिणाम स्वरूप यहां बीमारियों की उच्चदर पायी जाती है। गरीब लोग स्वास्थ्य खर्च में वृद्धि, कम आय और मृत्यु के संदर्भ में एक अप्रभावी सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रणाली की सबसे बड़ी कीमत चुकाते हैं।"[1]

अस्वस्थता चाहे किसी भी प्रकार की हो और किसी के लिए भी हो हर परिस्थिति में हॉनिप्रद ही होती है, लेकिन यदि महिलाएँ अस्वस्थ होती हैं, तो इसका दुष्प्रभाव सम्पूर्ण घर परिवार को भुगतना पड़ता है। "स्वास्थ्य मानव विकास का एक महत्वपूर्ण कारक है। समाज और स्वास्थ्य के बीच अन्तःक्रिया का अध्ययन आधुनिक काल में समाजशास्त्र का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन गया है। समाजशास्त्रीय, समाजशास्त्र के विभिन्न आयामों मसलन–रूग्णता, मृत्युदर, अस्पताल, चिकित्सक–मरीज संबंध आदि को सामाजिक जीवन एवं सामाजिक संस्थानों से जोड़कर उनके परस्पर प्रभावों का अध्ययन करते हैं।"[2]

स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क का निवास होता है और स्वस्थ मस्तिष्क ही स्वस्थ समाज को विकसित करता है। भारतीय संविधान के प्रत्येक नागरिक को समान अधिकार प्राप्त हैं फिर वह चाहे स्त्री हो या पुरूष।

"स्वास्थ्य मानव जीवन की एक अनमोल संपत्ति है। मनुष्य के जीवन और उसकी सुरक्षा के लिए स्वास्थ्य से ज्यादा महत्तवपूर्ण किसी अन्य की कल्पना करना कठिन है। स्वास्थ्य किसी भी समाज की प्रगति के लिए अनिवार्य है। जो भी व्यक्ति अथवा समाज स्वास्थ्य की दृष्टि से पिछड़ा होता है। वह न केवल सम्पन्नता की दृष्टि से पिछड़ जायेगा, बल्कि ऐसे समाज में जीवन मूल्यों की स्थापना करना भी बेहद कठिन हो जायेगा।"[3]

देश में नागरिकों के बौद्धिक मानसिक, शारीरिक स्वास्थ्य के स्तर से ही मानव संसाधन के कार्य क्षमता का निर्धारण होता है और यह सर्वविदित है कि अच्छा स्वास्थ्य किसी समाज और राष्ट्र के लिए अमूल्य धरोहर है।

"वर्तमान में समाजशास्त्री स्वास्थ्य को प्रभावित करने वाले सामाजिक कारकों का अध्ययन कर स्वास्थ्य से संबंधित समस्याओं के सामाजिक निराकरण का भी सुझाव प्रस्तुत करते हैं। प्रो0 मधु नागला ने स्वास्थ्य एवं स्वास्थ्य सेवा से संबंधित अध्ययनों को दो भागों में बॉट कर प्रस्तुत किया है। प्रथम भाग में स्वास्थ्य को आहार एवं पोषण से जोड़ने वाले तथा दूसरे में स्वास्थ सेवा से संबंधित अध्ययन के ऊपर चर्चा एवं विश्लेषण को प्रस्तुत करता है।"[4]

"भारतीय मनीषियों की यह उक्ति पहला सुख निरोगी काया" अर्थात Health is Wealth, इस तथ्य को प्रमाणित करता है कि अच्छा स्वास्थ्य व्यक्तिगत सुखभोग एवं प्रगति के लिए तो आवश्यक होता ही है, सामुदायिक व राष्ट्रीय विकास में भी इसकी महत्वपूर्ण भूमिका होती है। स्वास्थ्य सभी के लिए अनिवार्य तथा उपयोगी है। इसका संबंध केवल शारीरिक स्वास्थ्य से न होकर मानसिक, सामाजिक,आध्यात्मिक तथा संवेगात्मक स्वास्थ्य से भी है। शान्त चित्त, चिन्ता मुक्त, प्रसन्न चित्त एवं संयतचित्त व्यक्ति को भी अच्छे स्वास्थ्य की श्रेणी में रखा जाता है। स्वास्थ्य को अधिकांश समाजों में संस्कृतियों के विषय वस्तु के रूप में देखा जा सकता है और किसी भी व्यक्ति का यह जन्म सिद्ध अधिकार माना जा सकता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार स्वास्थ्य पूर्णतया शारीरिक, मानसिक और सामाजिक रूप से स्वस्थ होना है केवल रोग का अभाव व दुर्बलता नहीं। "भारतीय संस्कृति प्रधानतः एक ग्रामीण संस्कृति है। भारतीय सामाजिक सांस्कृतिक ढ़ाचे में स्वास्थ्य,रोग व चिकित्सा संबंधी विश्वासों मूल्यों एवं व्यवहारों का पृथक अस्तित्व न होकर सम्पूर्ण संस्कृति का एक अभिन्न अंग है।"[5]

"किसी भी परिवार की धुरी महिला होती है। उसकी स्वास्थ्य स्थिति का सीधा प्रभाव परिवार के सदस्यों पर पड़ता है। "यदि घर की महिला स्वस्थ है, तो उसके बच्चे भी स्वस्थ होंगे और परिवार के अन्य सदस्यों पर भी इसका सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा। एक स्वस्थ महिला ही अपने परिवार की देखभाल व पोषण जरूरतों की पूर्ति अच्छें ढ़ग से कर सकती है।

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- IV, Issues-26, YEAR- Oct.-Dec.-2022

हालांकि अच्छा स्वास्थ्य किसी भी व्यक्ति के लिए एक आवश्यक जरूरत है।''[6]

महिलाएँ पारिवारिक संरचना की रीढ़, परिवार और समाज के बीच मजबूत कड़ी होने के साथ–साथ समस्त सामाजिक संबंधों की आधारशिला होती है। उनके द्वारा किये जाने वाले अन्तः क्रियात्मक व्यवहार समाज में अनेक परिवारों की विविध भूमिकाओं का निर्वहन करती है। इसलिए भारत सरकार के नीति आयोग ने महिलाओं के लिए शिक्षा, स्वास्थ्य व परिवार कल्याण तीन क्षेत्रों को अनिर्वाय रूप से निर्धारित कर उनकी स्थिति को सुधारने का प्रयत्न किया है।

''सम्पूर्ण भारत की यदि तस्वीर देखें, तो भारत में स्त्रियों की संख्या में कमी का होना एक चिन्ताजनक विषय है, क्योंकि यह समुदाय में बरते हुए अत्याचार का द्योतक है।''कम से कम स्त्रियों के मामले में भारतीय समाज जितना पाखण्डी है, दुनिया भर में उस मिसाल को ढूढं पाना मुमकिन नहीं है। यूरोप का पुर्नजागरण जरूर पश्चिमी दुनिया में परिवर्तन लाया है, अन्यथा स्त्रियों पर अत्याचार हर देश में हर काल में होता रहा है।''[7]

महिलाओं के स्वास्थ्य के प्रति हमेशा से एक भेदभाव की मानसिकता पायी जाती है और इसका मुख्य कारण शारीरिक असुरक्षा का भय है। आधी आबादी का प्रतिनिधित्व करने वाली महिलाओं के लिए विविध प्रकार की सरकारी व गैर सरकारी योजनाएँ हमेशा से बनायी जाती रही है और ग्रामीण क्षेत्रों में यह स्थिति और भी भयावह है। अभी भी प्राचीन रीतियों व नीतियों के आधार पर संवैधानिक समानता व न्याय का आदर्श कोसों दूर दिखायी पड़ता है। वर्ष 2011 की जनगणना के आधार पर एक तरफ केरल जैसे राज्य है जहां प्रति हजार पुरूषों पर 1084 महिलाएँ हैं, जबकि पंजाब प्रान्त में 1000 पुरूष पर 893 और उत्तराखण्ड राज्य में यह 963 है। ''[8]

उपरोक्त तथ्य इस बात इस बात के संकेत देते है कि महिलाओं के साथ भेदभाव की नीति को आज भी लागू कर उन्हें समानता के अधिकार से वंचित रखा जाता है और इसमें महिला का स्वयं के प्रति लापरवाह होना भी एक प्रमुख कारण है।

''स्वच्छता का संबंध पर्यावरण और पर्यावरण का संबंध स्वास्थ्य से होता है। अतः स्वस्थ रहने के लिए हमे जीवन के प्रत्येक पहलू सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक एवं स्वास्थ्य संबंधी स्वच्छ पर्यावरण की नितान्त आवश्यकता है। जिससे स्वास्थ्य के साथ–साथ मानसिकता भी स्वस्थ हो सकें।''[9]

'' राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण एन0एफ0एच0एस0'2 के ऑकड़ें के अनुसार 24.9 प्रतिशत माताओं का प्रसव डाक्टर द्वारा सम्पन्न हुआ। 9.8 प्रतिशत ए0एन0एम0 नर्स या प्रशिक्षित दाई द्वारा सम्पन्न हुआ, प्रसव ऐसे थे, जिन्हें पारम्परिक तरीकें से कराया गया। गर्भावस्था के दौरान 53.3 प्रतिशत महिलाओं की जॉच स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं द्वारा की गई। प्रथम तीन माह में होने वाली जॉच का प्रतिशत केवल 29.9 था। 54.2 प्रतिशत महिलाओं को ही केवल 2 या 2 से अधिक बार टिटनेस की सुई लगाई गई थी। 38.6 प्रतिशत महिलाओं को ही आयरन की गोली या सिरप प्राप्त हुई। 45.2 प्रतिशत महिलाओं को खून की कमी पाई गई और 12.8 प्रतिशत गम्भीर रक्ताल्पता से ग्रसित थी।''[10]

उत्तराखण्ड की भौगोलिक, सामाजिक, आर्थिक परिस्थितियां अन्य राज्यों से भिन्न हैं। यहॉ ज्यादातर क्षेत्र पहाड़ी व कुछ मैदानी होने के कारण महिलाओं में श्रम की अधिकता पायी जाती है। जहां गृहणी होने के नाते पानी, पशुचारा, लकड़ी आदि के लिए मीलों दूर जाकर व्यवस्था करनी पड़ती है, वहीं कार्योजित महिलाओं को दूरस्थ क्षेत्रों में जाकर अपने कार्यों का सम्पादन करना पड़ता है। जैसा कि पूर्व में भी स्पष्ट किया गया है कि पर्वतीय क्षेत्रों में परिवर्तन की गति धीमी है। वर्तमान में महिलाऐं गृहणी हो या कार्योजित सशक्त अवश्य हुई हैं, लेकिन ऐसा भी देखने को मिला है कि कार्योजित होने के पश्चात चाह कर भी वह अपने स्वास्थ्य का उतना ध्यान नहीं रख पाती, जितना की उनको रखना चाहिए और यही कारण है कि उत्तराखण्ड में भी महिला अनुपात प्रति हजार पुरूषों में 963 है। पोषण विशेषज्ञों के अनुसार, कठोर परिश्रम करने वाली ग्रामीण महिलाओं को लगभग 3000 किलो कैलोरी तथा मध्यम श्रेणी कार्य करने वाली महिलाओं को 2250 किलो कैलोरी की प्रतिदिन आवश्यकता होती है और ऐसा न करने पर जहॉ एक ओर रोगों से लड़ने की प्रतिरोधक क्षमता कम होती है, बल्कि उनका शारीरिक, मानसिक स्वास्थ्य भी प्रभावित होता है। इसकी उत्तरदाताओं को कितनी जानकारी है, को जानने के प्रयास में प्राप्त ऑकड़े निम्नवत है।

शोध का उद्देश्य – प्रस्तुत शोध पत्र का उददेश्य पहाड़ की महिलाओं की स्वास्थ्य संबंधी स्थिति को जानना और समयानुसार क्या उसमें कुछ खास परिवर्तन हुए हैं को भी जानने का प्रयास किया गया है ।

शोध का उद्देश्य – प्रस्तुत शोध पत्र का उददेश्य पहाड़ की महिलाओं की स्वास्थ्य एवं धर्म संबंधी स्थिति को जानना और समयानुसार क्या उसमें कुछ खास परिवर्तन हुए हैं, को भी जानने का प्रयास किया गया है ।

अध्ययन समग्र– सामान्यतः अध्ययन समस्या से संबंधित क्षेत्र में आवासित मानव समुदाय अध्ययन समग्र का निर्धारण

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- IV, Issues-26, YEAR- Oct.-Dec.-2022

करता है। जिस पर शोधकर्ता द्वारा किए गए निष्कर्ष निर्भर करते हैं।

प्रस्तुत अध्ययन में जनपद अल्मोड़ा में स्थित महिला डेरी विकास परियोजना से जुड़ी ग्रामीण वह महिलाओं, जो दुग्ध समितियों से जुड़ी हैं, को अध्ययन के लिए लिया गया है, जो कि प्रस्तुत शोध का अध्ययन समग्र हैं।

शोध प्ररचना एवं पद्धतिशास्त्र– प्रस्तुत शोध पत्र में वर्णनात्मक शोध पद्धति का प्रयोग किया गया है। तथा यह निर्दशन की लाटरी पद्धति पर आधारित है। जिसमें से 300 महिलाओं को उत्तरदाता के रूप में चुना गया है।

– पोषण आहार का तात्पर्य दूध पीना व दही खाने से हैं
– पोषण आहार का तात्पर्य अण्डा खाने से है।
– पोषण आहार का तात्पर्य जो आंगनबाड़ी कार्यकर्तियों द्वारा उपलब्ध कराया जाता है ।

अतः पोषण आहार की जानकारी का अभाव पाया जाना एक गम्भीर समस्या है। इसका मूल कारण अशिक्षा व गरीबी को भी माना जा सकता है।

अतः महिलाओं की स्वास्थ्य संबंधी प्रस्थिति का मूल्यांकन कर यह जानने का प्रयास विभिन्न प्रश्नों के माध्यम से किया गया है कि अनमोल धरोहर स्वास्थ्य के प्रति वो कितनी समर्पित है तथा परिवार से उनको कितना सहयोग मिलता है या मिल पा रहा है। उत्तरदाताओं से जानने का प्रयास किया गया है कि वे स्वंय के स्वास्थ्य के प्रति जागरूक हैं।

वर्तमान स्वास्थ्य सेवाओं के विस्तार एवं विकास के कारण व्यक्ति के जीवन में भी स्वास्थ्य के प्रति बदलाव देखा जाने लगा है। खान–पान का विशेष ध्यान न देना ग्रामीण महिलाओं की नियति अथवा कार्य बोझ की अधिकता को माना जा सकता है। नये–नये रोगों के साथ नयी–नयी क्रान्तिकारी औषधि का जन्म वर्तमान वैज्ञानिक आविष्कारों का उत्तम उदाहरण है। तथापि ग्रामीण महिलाएँ आर्थिक रूप से सशक्त न होने के कारण रोग लग जाने की स्थिति में भी इलाज करानी की स्थिति मे असमर्थ पायी जाती हैं। चयनित महिलाओं से जानने का प्रयास किया गया कि अस्वस्थता की स्थिति में उनके उपचार का माध्यम क्या होता है? क्योंकि प्राचीन परम्परागत चिकित्सा पद्धति एवं मूल्यों के प्रति ग्रामीण समाज की आस्था आज भी परिलक्षित होती है और इसमें जादू–टोना, भूत–प्रेत या अप्राकृतिक शक्तियां सम्मिलित होती है।

व्यक्तिगत साक्षात्कार के आधार पर शोधार्थिनी द्वारा कुछ तथ्यों को जानने का प्रयास किया गया, जिसमें निम्न उत्तर प्राप्त हुए।

अधिकांश लोगों का सरकारी अस्पताल में उपचार कराने का कारण उनकी कमजोर आर्थिक स्थिति पायी गयी।

सरकार द्वारा दी जा रही कई स्वास्थ्य सुविधाओं का लाभ सिर्फ सरकारी अस्पतालों में ही मिलता है। यह भी एक कारण है।

प्राइवेट डॉक्टर से उपचार कराने वालों की आर्थिक स्थिति सामान्य थी, लेकिन इनमें अधिकांश वे महिलाएँ सम्मिलित पायी गयी जिन्हें सरकारी अस्पतालों के बजाय अन्य अस्पतालों में इलाज कराने का परामर्श दिया गया।

कुछ इलाकों में सरकारी अस्पतालों के अभाव और प्राइवेट डॉक्टर की सुलभता भी प्राइवेट अस्पतालों में इलाज कराने का एक कारण है।

सरकारी अस्पताल से उपचार कराने की असमर्थता व्यक्त करते हुए, घरेलू और टोना–टोटका से संबंधित महिलाओं में परम्परागत बाध्यता व विरोध करने की असमर्थता पायी गयी।

ग्रामीण क्षेत्र में महिलाओं के ऊपर दोहरा कार्यबोझ होता है। घर की सम्पूर्ण जिम्मेदारियों के साथ कृषि,पशुपालन व व्यावसायिक कार्यों का संचालन भी उनके द्वारा किया जाता है और यही स्थिति महिला डेरी विकास परियोजना की दुग्ध उत्पादक सहकारी समिति अल्मोड़ा की चयनित महिलाओं की भी है। महिलाएं परिवार, समाज के निर्माण और विकास में प्रत्यक्ष रूप से योगदान देती है, यह एक सर्वविदित तथ्य है अतः सर्वप्रथम उनके स्वास्थ्य की ओर ध्यान देना नितान्त आवश्यक है लेकिन ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं के प्रति भेदभाव के उदाहरण आज भी बहुतायत मिलते हैं। गृहकार्य में अवरोध पारिवारिक सदस्यों को उनकी अस्वस्थ स्थिति को अनदेखा करने का कारण माना जा सकता है।

जब भी महिला सशक्तिकरण की बात की जाती है, तब चर्चा केवल राजनीतिक व आर्थिक सशक्तिकरण पर आकर रूक जाती है जबकि सशक्तिकरण के प्रमुख आयामों में स्वास्थ्य भी एक है। महिलाएँ परिवार की धुरी होती है और उनकी स्वास्थ्य स्थिति का सीधा प्रभाव परिवार पर पड़ता है। यूँ तो अच्छा स्वास्थ्य सभी की आवश्यकता है, लेकिन महिला स्वास्थ्य अपेक्षाकृत अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है।

दुग्ध समिति के प्रमुख कार्यों में समिति से जुड़ी महिलाओं को स्वास्थ्य संबंधी जानकारी का प्रशिक्षण दिया जाता है तॉकि वे स्वयं के स्वास्थ्य के प्रति जागरूक रह सकें। अतः जानने का प्रयास किया गया कि क्या केन्द्र में उन्हें स्वास्थ्य

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- IV, Issues-26, YEAR- Oct.-Dec.-2022

संबंधी जानकारी दी जाती है। सभी 100 प्रतिशत महिलाओं ने इसे स्वीकार किया है, लेकिन जब यह जानने का प्रयास किया गया कि प्रशिक्षण के नियमों को व्यवहार में लाती है, तो उत्तर निम्नवत थे।

किसी विकसित समाज का एक महत्वपूर्ण घटक उसमें नागरिकों का स्वास्थ होता है। समस्त प्रगति एवं विकास के बावजूद आज आधुनिक विश्व विशेष रूप से भारत निम्न स्तरीय स्वच्छता से ग्रस्त है। जिसका संबंध स्वास्थ्य से है। "11 ग्रामीण क्षेत्रों में मासिक धर्म के समय नियमों की कठोरता के कारण कई बार महिलाओं के स्वास्थ्य पर इसका असर देखने को मिलता है। मासिक धर्म एक स्वाभाविक व प्राकृतिक प्रक्रिया है। जिसमें चार से पॉच दिन तक महिलाओं को अस्पृश्य व अपवित्र समझा जाता है। उत्तराखण्ड में भी मासिक धर्म के समय पूजा गृह, रसोई व अन्य कार्यों में इन महिलाओं की सहभागिता पर प्रतिबन्ध होता है। इतना ही नहीं उक्त अवधि में बैठने का स्थान बर्तन एवं बिस्तर भी अलग होता है। किसी के द्वारा मासिक धर्म वाली महिला को स्पर्श करने से उस पर गोमूत्र छिड़का जाता है। इतना ही नहीं उन्हें स्नान करने एवं कपड़े धोने के लिए भी दूर नौले में जाना पड़ता है। आज समय बदल चुका है। शहरों में इस प्रकार की मानसिकता को समाप्त तो नहीं कहा लेकिन यह प्रतिबन्ध समाप्ति की ओर है।

स्वच्छता की दृष्टि से महिलाओं के मासिक धर्म की सफाई का महिलाओं के जीवन में महत्वपूर्ण स्थान रखता हैं। कई महिलाओं को इस अवधि में स्वच्छता का ध्यान न रख पाने के कारण बीमारियों का समाना करना पड़ता है। महिलाओं के स्वास्थ्य का संबंध स्वच्छता से भी होता है।

- कपड़ा पुराना व उपयोग किया होता है जैसे–गद्दें, रजाई के पुराने कवर या चादन।
- इस कपड़े का प्रयोग कर उसे धोकर सुखाया जाता है और पुनःमासिक धर्म के समय प्रयोग किया जाता है।
- सेनेटरी पैड,नेपकिन का प्रयोग न करने का मुख्य कारण आर्थिक अभाव बतलाया गया है।
- जिनका मासिक धर्म बन्द हो चुका है पूर्व में उनके द्वारा कपड़े के प्रयोग की बात बतलायी गयी हैं।

अतः स्पष्ट है कि तमाम सामाजिक विकास के बावजूद मासिक धर्म के समय व्यक्तिगत स्वच्छता का अभाव पाया जाना उनके प्रतिकूल व खराब स्वास्थ्य का प्रतीक है। वर्तमान समय की आवश्यकता महिला स्वास्थ्य को बढ़ावा देकर कारगर व प्रभावी उपाय व साधनों की उपलब्धता की आवश्यकता है। अतः स्पष्ट है कि "स्वच्छता व स्वास्थ्य सुखी जीवन का आधार है। स्वस्थ्य जीवन शैली के लिए आस–पास के वातावरण का स्वच्छ होना जरूरी होता है। इसमें हम रोगों से दूर रहने के साथ–साथ बेहतर वातावरण को भी विकसित करते है।"[12]

महिला सशक्तिकरण के बीच जब ध्यान लिंगानुपात पर जाता है, तो देखकर चिन्ता होती है कि सशक्तिकरण के इस दौर में भी लिंगानुपात क्यों घट रहा है और जब तक इस समस्या का निराकरण नहीं होगा तब तक सशक्तिकरण की पहेली को सुलझाना भी एक दुरूह कार्य होगा सरकारी सहायता प्राप्त योजनाएं और कार्यक्रम केन्द्र सरकार द्वारा नागरिकों के स्वास्थ्य स्तर को बढ़ाना, मृत्युदर में कमी लाना, टीकाकरण अभियान तथा शिक्षा और प्रशिक्षण संबंधी कार्यक्रम शामिल होते हैं।

धार्मिक प्रस्थिति– धर्म मानव जीवन व समाज की अत्यन्त महत्वपूर्ण एवं सार्वभौमिक धारणा है। प्रत्येक समाज में चाहे वह आदिम हो या सभ्य, सरल हो अथवा जटिल, ग्रामीण हो अथवा नगरीय धर्म की अभिव्यक्ति अवश्य पायी जाती है। विभिन्न क्षेत्र व संस्कृतियों में धर्म का स्वरूप अलग–अलग होता है, लेकिन प्रत्येक समाज में यह किसी न किसी रूप में अवश्य विद्यमान होता है। "मानव समाज में धर्म इतना सार्वभौमिक स्थायी तथा व्यापक है कि इसे व्यापक रूप से समझे बिना समाज को नहीं समझा जा सकता है।"13

परम्परागत ग्रामीण समाज धर्म प्रधान समाज है। जहां धर्म की महत्ता सर्वोपरी व सर्वक्षेत्र व्याप्त है। यह व्यक्ति ,परिवार और समाज के जीवन को अगणित रूपों से प्रभावित करता है। भारतीय समाज में भौतिक सुख प्राप्ति जीवन का लक्ष्य न होकर धर्म–संचय की प्रधानता पर विश्वास किया जाता है। या ये कहा जाय कि भारतीय सामाजिक व्यवस्था पूर्ण रूप से धर्म केन्द्रित है। अतिश्योक्ति नहीं होगी। "धर्म की धारणा के अन्तर्गत हिन्दू उन सब अनुष्ठानों और गतिविधियों को करता है जो मानवीय जीवन को गढ़ती व बनाये रखती हैं। हमारे पृथक–पृथक हित होते हैं और विभिन्न इच्छाएँ होती हैं और विरोधी आवश्यकताएँ होती हैं। जो बढ़ती हैं और बढ़ने की दशा में परिवर्तित भी हो जाती हैं। धर्म का सिद्धान्त हमें आध्यात्मिक वास्तविकताओं को मान्यता देने के लिए सजग करता है। "[14]

पाश्चात्य विचारकों के साथ–साथ कतिपय भारतीय विद्वानों ने भी भारतीय धर्म साधना को रूढ़िग्रस्त तथा हठधर्मितापूर्ण कहकर उसे दुराग्रह मूलक सिद्ध करने का प्रयत्न किया, उसे वर्तमान समाज में बदलते परिवेश के अनुसार अनुपयुक्त, वैज्ञानिकता के युग में अनुपयोगी कहा। "वास्तव में भारत में हिन्दू धर्म क्रमिक रूप में एक ऐसा युक्तियुक्त संश्लेषण रहा है, जिसने वैज्ञानिक उन्नित के साथ–साथ अपने अन्तर्जीवन में नित्य नूतन विचारों का समावेश करने में कदापि संकोच नहीं

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- IV, Issues-26, YEAR- Oct.-Dec.-2022

किया, यही कारण है कि हमारे देश के धार्मिक आन्दोलन मानवीय कल्पनाओं अथवा निराधार आस्थाओं का प्रतिफल न होकर ठोस तर्क भूमि पर अधिष्ठित है''[15]

भारतीय समाज सदैव धर्म परायण एवं नैतिक कर्तव्यों पर केन्द्रित रहा है, जो मानव कल्याण का पोषक और विज्ञान, जिज्ञासाओं व आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु महत्वपूर्ण होता है यह एक ऐसा सर्वव्यापक एवं स्थायी तत्व है, जिसे समझे बिना समाज को नहीं समझा जा सकता इसका संबंध मानव की आलौकिक शक्तियों, भावनाओं, श्रद्धा एवं भक्ति से होता है। यह मानव के आन्तरिक जीवन के साथ–साथ सामजिक, आर्थिक व सांस्कृतिक जीवन को भी प्रभावित करता है इसीलिए टाइलर ने ''धर्म को एक अलौकिक शक्ति पर विश्वास''कहा है।''[16]

भारतीय समाज अपनी धर्मपरायणता के कारण हमेशा से आदरणीय रहा है। यह भारतीय समाज का सर्वोच्च आदर्श तथा मनुष्य के अन्तिम लक्ष्य तक पहुँचने का सर्वोत्तम साधन माना गया है। ''भारतीय इतिहास में धर्म समकालीन जीवन के महत्वपूर्ण पहलुओं में से एक है,यह कहना गलत नहीं होगा कि धर्म आज भी भारत में अनेक लोगों के हितों को समाहित करने वाली ईकाई है। और आगे भ यह प्रकार्य करता रहेगा। पूर्व के दशकों में जीवन का कोई भी आयाम धर्म के समान महत्व प्राप्त नहीं कर सका। भारतीय सामाजिक संबंध आवश्यक रूप से धार्मिक, विचारों एवं क्रियाओं से भरे हुए है''[17]

प्रत्येक धर्म का आधार किसी शक्ति पर विश्वास है जो निश्चित रूप से मानव से श्रेष्ठ है, परन्तु केवल विश्वास को सम्पूर्ण धर्म नहीं कहा जा सकता है। विश्वास का एक भावनात्मक आधार भी होता है। जैसे शक्ति के संबंध में भय या उसके दण्ड का भय साथ ही उस शक्ति के प्रति श्रद्धा ,भक्ति या प्रेमभाव भी धर्म का आवश्यक अंग है।

''धर्म श्रेष्ठ,मैं, मनुष्य से श्रेष्ठ उन शक्तियों की संतुष्टि या आराधना समझता हूँ, जिनके संबंध में यह विश्वास किया जाता है कि वे प्रकृति और मानव जीवन को मार्ग दिखलाती है और नियन्त्रित करती है।''[18]

धर्म जाति एवं पारम्परिक न्याय प्रणाली की विवेचना का महिलाओं के संबंध में निर्धारण पुरूष मानसिकता से उभार लेता है इस दृष्टि से यह कहा जा सकता है कि ''धर्म जाति एवं पारम्परिक न्याय प्रणाली पुरूष सत्तात्मकता से आकर ग्रहण करती है जो महिला पुरूष के मध्य की असमानता को बढ़ावा देती है। धार्मिक विश्वास, पितृसत्तामक विचारधारा के रूप में महिलाओं की अधीनस्थता को वैधता प्रदान करते है। उदाहरण के लिए महिलाओ पुजारी बनने, मासिक धर्म एवं प्रसव काल के दौरान पवित्र स्थलों पर उनके प्रवेश करने को वर्जित माना गया है।''[19]

धर्म व्यक्ति के व्यक्तित्व सामाजीकरण, वैवाहिक एवं पारिवारिक जीवन, शिक्षा, अर्थव्यवस्था, राजनैतिक, आध्यात्मिक आदि सभी पहलूओं से प्रत्यक्ष में सदाचार, परोपकार, सहिष्णुता, प्रेम, श्रद्धा, सत्यता आदि सदगुणों का विकास होता है। दुर्खीम के अनुसार धर्म ''पवित्र वस्तु से संबंधित आचरणों व विश्वासों की वह परम्परा है, जो अपने से संबंधित लोगों को नैतिक समुदाय से जोड़ती है।''[20]

आज के वैज्ञानिक युग में सामाजिक परिस्थितियॉ बदली है, लोगों का चुकाव धर्म की अपेक्षा वैज्ञानिकता की ओर अधिक दिखायी देता है। ''आज महिलाओं की सामाजिक स्थिति बदली है। महिलाऐं सबके सम्मुख़ निर्णय लेने योग्य बनी है। निर्णय लेने की प्रक्रिया और सत्ता संचालन में भागीदारी से महिलाओं को समूचें ग्रामीण क्षेत्र की काया को बदलने का अवसर मिला है।''[21] तथापि महिलाऍ पुरूष सत्तात्मकता के अन्तर्गत न केवल निजी संपत्ति है, अपितु उत्पीड़न के लिए सॉफ्ट टारगेट भी। धर्म व जाति की संस्थाऍ पवित्रता, अपवित्रता प्रारूप का निर्धारण करती हैं और इस प्रारूप में पुरूष पवित्र व महिलाऍ अपवित्र समझी जाती हैं। हिन्दू नारी भारतीय समाज का अभिन्न अंग रही हैं, उसने सदैव धर्म द्वारा स्थापित कर्तव्यों पर आदर्शों का निष्ठापूर्वक पालन किया है। यही कारण है कि वह प्राचीनकाल से ही धर्मभीरू मानी जाती रही है। भारतीय समाजों में विशेषकर ग्रामीण समाजों में अन्धविश्वास एवं कुप्रभाव अपनी चरम सीमा पर विद्यमान है क्योंकि पुरूष द्वारा संचालित समाजीकरण इस प्रकार का है जिसमें महिलाऍ अपवित्र व दोयम दर्जे की मानी जाती है। उत्तराखण्ड की धार्मिक भावनाऍ यहां प्रचलित धार्मिक पद्धतियों जैसे–जागर, बैसी, झाड़ू–फूक, टोना–टोटका, घरेलू उपचार आदि पर केन्द्रिक है और ग्रामीण समाज उसके प्रति हमेशा से आस्थावान रहा है । एक ओर वैज्ञानिक युग का अनुसरण करने का प्रयास महिलाओं द्वारा किया जा रहा है, लेकिन परम्परागत धार्मिक विश्वास के समक्ष उनकी वैज्ञानिकता नतमस्तक हो जाती है।

प्रस्तुत अध्याय में चयनित दुग्ध समिति से जुड़ी हुई, महिलाओं की धार्मिक स्थिति का मूल्यांकन करने का प्रयास किया गया है जिसमें ईश्वर पर विश्वास भाग्य व कर्म के प्रति दृष्टिकोण, जादू–टोना, तन्त्र– मंत्र जैसी अप्राकृतिक शक्तियों पर विश्वास, सगुन, अपसगुन, ग्रह–नक्षत्र की दशाऍ, शुभ–अशुभ, दिन–बार आदि के आधार पर धार्मिक स्थिति को जानने का प्रयास विभिन्न सारणियों के माध्यम से प्राप्त प्रत्युत्तरों के आधार पर प्राप्त किया जा रहा है।

यूँ तो सम्पूर्ण भारतीय समाज धर्म प्रधान रहा है, लेकिन ग्रामीण समाज मुख्यता धर्म द्वारा संचालित होता है। माना

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- IV, Issues-26, YEAR- Oct.-Dec.-2022

जाता है कि विज्ञान व धर्म का समन्वय एक कठिन व जटिल प्रकिया है, क्योंकि धर्म का संबंध जहां अतीत के कारणों से होता है। वही विज्ञान तत्कालीन कारणों से संबंधित होता है कई विद्वानों ने धर्म के प्रति ग्रामीणों की अत्यधिक अन्धविश्वासी उदाहरण दिखायी पड़ते हैं, जिसका अनुसरण पारम्परिक सोच व अशिक्षिका के कारण वहां का जन समुदाय करता हुआ दिखायी पड़ता है और यह बात मुख्य रूप से महिलाओं पर लागू होती है। परिवर्तन प्रकृति का अनिर्वाय नियम है जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में होने वाले परिवर्तन को महिलाओं की तर्क शक्ति व सोच को भी देखा जा सकता हैं आज महिलाएँ घर की चाहरदीवारी से निकलकर विभिन्न व्यवसायी क्षेत्रों में अपनी पहुँच बनाने में सक्षम हुई है। जहां उनकी जागरूकता का स्तर बड़ा हैत्र वही अन्धविश्वासी प्रक्रियाओं में कमी को भी देखा जा सकता है।

देवभूमि होने के कारण उत्तराखण्ड के लोग धर्मभीरू व धार्मिक भावना से ओत–प्रोत होते हैं। विभिन्न धार्मिक संस्कारों पर कर्मकाण्डों का संपादन यहां अन्य समाजों की तुलना में बहुतायत रूप में प्राप्त होता है। यही कारण है कि भारतीय समाज को आज भी धर्म प्रधान परम्परागत माना जाता है। महिलाओं से जानने का प्रयास किया गया कि वे धार्मिक कर्मकाण्डों में पूर्व की अपेक्षा शिथिलता को अनुभव करती है।

जिन्होंने कमी की बात को स्वीकार किया है, उनका मानना है कि वर्तमान में आधुनीकिरण की चका–चौंध ने कर्मकाण्डों को गौंणता प्राप्त की है। जिन लोगों ने नहीं में अपने उत्तर प्रस्तुत किये हैं। उनका मानना है कि कर्मकाण्ड प्रत्यक्ष, अप्रत्क्ष रूप में चाहे सूक्ष्म रूप में ही किए जाते हैं, पर किए अवश्य जाते हैं।

वर्तमान युग वैज्ञानिकता पर आधारित होने के पश्चात भी न केवल ग्रामीण या पिछड़े बल्कि नगरीय व शहरी समाजों में भी वैज्ञानिक पद्धतियों के असरदार न होने की स्थिति में भूत–प्रेत, जादू–टोना जैसी अप्राकृतिक शक्तियों पर विश्वास को एक नई परम्परा के रूप में देखा जा रहा है। उत्तराखण्ड की मान्यतानुसार किसी दुर्घटना एवं अप्राकृतिक कारणों से यदि किसी की मृत्यु हो जाती है, तो ऐसी स्थिति में किसी पूर्वज के सताने अथवा पारिवारिक सदस्यों के साथ दुर्वव्यवहार होने की बात कहीं जाती है या किसी पूर्वज की आत्मा पारिवारिक सदस्यों के दुर्वव्यवहार के कारण संतुष्ट नहीं हो पाती है। मान्यतानुसार वे मृत आत्माएँ भटकाव की स्थिति में आकार घर–परिवार व संबंधियों को अनेक प्रकार से परेशान करती हैं, जिनकी आत्मा की शान्ति के लिए विशेष प्रकार की पूजा पद्धतियॉ संचालित की जाती हैं।

वर्तमान वैज्ञानिक युग में इन अप्राकृतिक शक्तियों पर उत्तरदाताओं के मूल्यांकन को निम्नवत स्पष्ट किया गया और पाया गया कि सर्वाधिक 60 प्रतिशत उत्तरदाता शिक्षित होने के पश्चात, समिति से जुड़ने के पश्चात तथा काफी जागरूक होने के पश्चात भी भूत–प्रेत व अप्राकृतिक शक्तियों पर पूर्णरूप से विश्वास रखती है, जबकि मात्र 5 प्रतिशत महिलाओं में नहीं तथा 35 प्रतिशत महिलाओं ने कभी–कभी विश्वास करने की बात को स्वीकार किया है। एवं कभी–कभी स्वीकार करने की बात इस तथ्य को प्रामाणित करती है कि ग्रामीण क्षेत्र में वैज्ञानिकता की तुलना में धार्मिक आस्था का प्रतिशत अधिक है तथ्य निम्नवत है।

परिवर्तन एक प्राकृतिक व अनिर्वाय नियम है। यही कारण है कि मानव समाज भी परिवर्तन के इस प्राकृतिक नियम से प्रभावित होता है। 18वीं शताब्दी के पश्चात विज्ञान व औद्योगिकीकरण बढ़ते चरणों ने प्राचीन धार्मिक रीति–रिवाजों, पम्पराओं, अन्धविश्वासों व आस्था व आस्था को बदलने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया है और और वैज्ञानिकता के इस युग में काफी हद तक परम्परागत मूल्य भी परिवर्तित हो रहे हैं। इसकी प्रामाणिकता को सिद्ध करने के लिए महिला डेरी विकास परियोजना की दुग्ध समिति अल्मोड़ा से जुड़ी महिलाओं से भी परम्परागत मूल्यों में परिवर्तन की जानकारी चाही गयी।

समाज में असमानता होना स्वाभाविक है, क्योंकि प्राकृतिक रूप से भी सभी व्यक्ति समान नहीं हैं। बावजूद इसके समाज में व्याप्त असमानताओं के आधार पर किसी के साथ भेदभावपूर्ण व्यवहार किया जाता है तो वह सामाजिक अन्याय की श्रेणी में आता है। और यह बात महिलाओं पर विशेष रूप से लागू होती है। वैज्ञानिकता के आधार पर यदि बात की जाय तो किसी भी व्यक्ति के जीवन स्तर को ऊपर उठाने के लिए नवीन मूल्यों से प्रत्यक्ष,अप्रत्यक्ष रूप में सामन्जस्य आवश्यक है यह बात पुरूषों में तो लागू होती दिखायी देती है, लेकिन महिलाएँ हमेशा इसका अपवाद रही हैं, क्योंकि उन्होंने उन पर थोपी गयी पारम्परिक मूल्यों को ही सहर्ष स्वीकार किया है, लेकिन दुग्ध समिति से जुड़ने के बाद उनमें आये हुए बदलावों को देखकर उनसे जानने का प्रयास किया गया कि नवीन मूल्य व्यक्ति के जीवन स्तर को ऊपर उठाने के लिए सार्थक हो सकते हैं।

आधुनिक समाज में धार्मिक गुरूओं ने एक ओर चमत्कारों द्वारा जनता को आकर्षित किया है, तो दूसरी ओर धर्म का बाजारीकरण धार्मिक संगठनों द्वारा जैसे–परोपकारी अस्पताल, विद्यालयों आदि का निर्माण कर लोक संस्कृति व परम्पराओं को प्रभावित किया है। आज जगह–जगह धर्म गुरूओं के प्रवचन व उपदेश सर्वत्र व्यावसायिक करण के रूप में देखे जा सकते हैं और जिनका अन्धानुकरण जनता द्वारा किया जाने लगा है। ग्रामीण परिवेश के धार्मिक स्थलों में भी यह प्रक्रिया बहुतायत

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- IV, Issues-26, YEAR- Oct.-Dec.-2022

देखी जा रही है और महिलाओं द्वारा उसमें सहभागिता का स्तर भी अधिक पाया जा रहा है। इन धार्मिक स्थलों में महिलाओं की सहभागिता को जानने का प्रयास सारणी संख्या 4.26 में किया गया है। प्राप्त प्रत्युत्तर निम्नवत हैं।

धर्म संबंधी स्थिति के अवलोकन से सकारात्मक की तुलना में नकारात्मक स्थिति का प्रभाव अधिक रूप में पाया गया है, जो उनकी धार्मिक प्रवृत्ति को प्रस्तुत करता है। जैसे –भूत–प्रेत पर विश्वास करना, ग्रह–दशाएँ को मानना, मंगल–अमंग, शुभ–अशुभ, दिन–बार पर विचार करना, कर्म की अपेक्षा भाग्य को अधिक महत्व देना, विवाह से पूर्व जन्म पत्रिका मिलाने में विश्वास करना, विधवा पुनर्विवाह, अर्न्तजातीय विवाह व विवाह–विच्छेद में प्रतिकूल विचारों का प्राप्त होना आदि, इसमें सम्मिलित हैं। अतः उपरोक्त तथ्यों के आधार पर कहा जा सकता है कि धार्मिकता को सशक्त आधार के रूप में मानने वाली इन महिलाओं को धार्मिक अंधविश्वासों से छुटकारा पाने में अभी कई सदियां लग जायेंगी। यहीं कारण है कि वर्तमान वैज्ञानिक दौर में भी उत्तरदाता महिलाओं का इस प्रकार विचारों की पुष्टि करना कहीं न कहीं सशक्तिकरण की प्रक्रिया में बाधक है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. नागला भूपेन्द्र, कुमार स्वास्थ्य और समाज जून, 2017 रावत पब्लिकेशन नई दिल्ली पृष्ठ सं0–50.
2. नागला मधु, सोसीयोलाजी ऑफ हेल्थ पब्लिकेशन नई दिल्ली, 2014–पृ0सं0 310.
3. सिंह अर्चना, भारतीय समाज में नारी दशा एवं दिशा–सम्पादक आलोक कुमार कश्यप आर्या पब्लिकेशन 2012, पृष्ठ सं0–144.
4. नागला मधु, सोसीयोलाजी ऑफ हेल्थ पब्लिकेशन नई दिल्ली,2014–पृ0सं0 311.
5. The Religion of an IndianTribe oxfort university press 1955 page no. 177.
6. सुखपात जी श्रीवास्तव, ग्रामीण भारत में महिलाओं की स्वास्थ्य स्थिति, पत्रिका, कुरूक्षेत्र नई दिल्ली, अक्टूबर 2008 पृ0सं0 29.
7. प्रसाद राकेश्वरी, नारी के स्वास्थ्य पर मडराता खतरा, कुरूक्षेत्र पत्रिका, नई दिल्ली पृ0सं0–36.
8. The Religion of an Indian Tribe Oxford University,press 1955,page no. 177.
9. बी0के0 नागला, स्वच्छता का समाजशास्त्र, एक परिचायात्मक विमर्श, भारतीय समाजशास्त्र, समीक्षा, रावत पब्लिकेशन, नई दिल्ली, जुलाई, दिसम्बर, 2016, पृ0सं0–16.
10. सुनीता प्रजनन एवं महिला स्वास्थ्य महिला पत्रिका ''उत्तरा, नैनीताल जुलाई–सितम्बर।
11. नागला भूपेन्द्र, महर्षि दयानन्द विश्व विद्यालय रोहतक bangala@yahoo.com
12. बी0के0 नागला, स्वच्छता का समाजशास्त्र, एक परिचायात्मक विमर्श, भारतीय समाजशास्त्र, समीक्षा, रावत पब्लिकेशन, नई दिल्ली, जुलाई, दिसम्बर, 2016, पृ0सं0–05.
13. डेविस के0ह्यूमन सोसाइटी –पृ0सं0–509.
14. राधा कृष्णन एस0 रिलिजन एण्ड सोसाइटी, जार्ज एलिन एण्ड अनविन लि0लंदन–1947, पृ0सं0 105–106.
15. चौधरी मन्जू, शिक्षित महिलाएँ एवं धर्म, राधा कमल मुकर्जी : चिन्तन परम्परा, वर्ष –04, अंक–2, जुलाई, दिसम्बर 2002, समाज विज्ञान संस्थान, चॉदपुर बिजनौर (उ0प्र0) पृ0सं0–45.
16. टाइलर ई0वी0 प्रीमीटीव कलचर 1924 पृ0सं0–424.
17. सक्सेना आशीष एवं विजय लक्ष्मी, आधुनिक भारत में धार्मिकता एवं स्वच्छता : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन–भारतीय समाजशास्त्रीय परिषद–रावत पब्लिकेशन नयी दिल्ली –जनवरी–जून–2017, पृ0सं0–26.
18. फ्रेजर जेन्स दी गोल्डन बा0न्यूयार्क मेकमिलन प्रेस, 1922–पेज न0–459.
19. सिडाना ज्योति, धर्म एवं जाति के घेरे में महिला अस्मिता : एक समाजशास्त्रीय विमर्श, भारतीय समाजशास्त्र समीक्षा, जुलाई, दिसम्बर, रीडर्स प्रेस नई दिल्ली 2015, पृ0सं0–117.
20. दुर्खीम द एलीमेन्ट्री तिवउे रिलीजियस लाइफ, न्यूयार्क फ्री प्रेस, 1912, पृ0सं0–47.
21. बहुगुणा अंजलि, महिला सशक्तिकरण की सारर्थकता में पंचायती राज, राधा कमल मुकर्जी, चिन्तन परम्परा समाज विज्ञान संस्थान चॉदपुर, बिजनौर (उ0प्र0) 2011, पृ0सं0–36.
22. सक्सेना आशीष, एवं विजय लक्ष्मी, आधुनिक भारत में धार्मिकता एवं स्वच्छताः एक समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य : भारतीय समाजशास्त्रीय समीक्षा : रावत पब्लिकेशन नई दिल्ली, जनवरी –जून, 2017 पृ0सं0–26.

*****